व्याख्यान - 8

स्नातक तृतीय खण्ड

मैथिली कथा साहित्यक परम्परा

जेना कि पूर्व पाठ मे कहल जे भारतीय कथा साहित्यक संग - संग मैथिली कथा साहित्य पर सेहो पाश्चात्य साहित्य क प्रचुर प्रभाव पड़ल अछि। एहि प्रसंग डॉ० देव शंकर नवीनक विचार सेहो देखल जा सकैत अछि - " एखन हमरा लोकनि कथाक जे स्वरुप देखैत छी, तकरा ने केवल ~~भारतीय~~ पौराणिक साहित्यक देन कहल जाएत आ ने विदेशी साहित्यक प्रभाव। कथा साहित्यक वर्तमान स्वरूपक श्रेय चारिटा स्रोत कें जाइत अछि - संस्कृत साहित्य, फारसी साहित्य, लोक साहित्य आ पाश्चात्य साहित्य। संस्कृत साहित्य सँ प्राप्त सामग्री हमर पुरान संस्कृति आ समकालीन सामाजिक परिस्थितिक झाँकि प्रस्तुत करैत अछि। फारसी साहित्य दार्शनिकता प्रधान हेबाक कारणें विशिष्ट रूपक दृष्टिकोण प्रदान कैलक। मध्यकालीन भारतीय सभ्यताक रूपमे शौर्यपूर्ण आ रोमानी कथा सूत्र हमरा लोकनि कें लोक साहित्यसँ प्राप्त भेल "।

डॉ० मायानन्द मिश्रक कथन सेहो उपर्युक्त विचारकें आओर पुष्ट करैत अछि - " यद्यपि भारतीय वाङ्मय मे कथा साहित्यक जन्म ऐतरेय ब्राह्मण शुनः शेपक कथासँ भऽ जाइत अछि, जकर विधिवत आगिला

विकास थिक पंचतंत्रक कथा जकर प्रभाव आ प्रेरणा विश्वभरिक कथा साहित्य पर स्पष्ट अछि। किन्तु भारतीय कथाक प्रेरणा भूमि योरोप विशेषतः अंगरेजीक कथा साहित्य रहल अछि, से हो निर्विवाद अछि।

जे किछु हो एतबा निश्चित जे संस्कृत साहित्यक परम्परा मे मैथिली कथा साहित्यक विकास परिलक्षित भेल आ संगहि एहि पर पड़ल। रामायण, महाभारत, पुराण ग्रन्थ, श्रीमद्भागवत विषयक रचना सभ पर कथा लिखबाक परम्परा तँ प्रारम्भ होइत करता संगहि बुद्धक वचनकेँ नौ भागमे सेहो प्राप्त कएल गेल जे जातक कथा कहाओल। कथा साहित्यक विकासमे एकर महत्वपूर्ण स्थान मानल गेल अछि। एहि साहित्यक रचनाकाल पाँचम शताब्दी ईसा पूर्व धरि मानल गेल अछि। एतय धरि स्पष्ट होइत अछि जे जातक कथा आ वृहत्कथा कथा साहित्यक आधारभूत संरचनाक मुख्य स्तम्भ अछि। भारतीय कथा साहित्य आ मैथिली कथा साहित्यक समन्वित विकसित परम्पराक प्रारम्भिक स्वरूप पर विचार-विमर्श करबाक उपरान्त ई स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली कथाक परम्परा सुदृढ आधार पर आरम्भ भेल।

REDMI NOTE 8 PRO
AI QUAD CAMERA

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक